अध्याय 3: मनुष्यता

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 11 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	प्रश्न-अभ्यास (क) — पाठ-बोध प्रश्न	8 प्रश्न
प्रश्नावली 3.2	प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए	3 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — प्रश्न-अभ्यास (क) — पाठ-बोध प्रश्न

प्रश्न 1

कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

हल

कवि मैथिलीशरण गुप्त ने उस मृत्यु को सुमृत्यु कहा है जिसे मरने के बाद भी सब लोग याद करें।
कविता की पहली पंक्तियाँ हैं — 'मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।'
अर्थात् जो व्यक्ति अपने जीवन में दूसरों के लिए जीता है, दूसरों के हित के लिए त्याग करता है, उसकी मृत्यु सुमृत्यु (अच्छी मृत्यु / सार्थक मृत्यु) बन जाती है।
इसके विपरीत, जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता और मरता है, उसकी मृत्यु वृथा है — 'हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए।'

उत्तर: जो मृत्यु के बाद भी सबकी यादों में जीवित रहे, जो दूसरों के लिए जीने और त्याग करने के कारण अमर हो जाए — कवि ने ऐसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है।

प्रश्न 2

उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

हल

कवि के अनुसार उदार व्यक्ति की पहचान उसके परोपकारी कार्यों से होती है।
कविता में कहा गया है — 'उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती, / उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।'
उदार व्यक्ति की यश-कीर्ति सजीव रहती है और समस्त सृष्टि उसकी पूजा करती है।
उदार व्यक्ति में 'अखंड आत्म भाव' होता है — वह स्वयं को समस्त मानवता से जुड़ा मानता है।
वह परोपकार करता है, दूसरों की सहायता करता है और संकट में भी मनुष्यता के लिए अपना सर्वस्व देने को तैयार रहता है।

उत्तर: उदार व्यक्ति की पहचान उसके परोपकारी कार्यों, दूसरों के प्रति सहानुभूति, और मानवता-हित के लिए त्याग करने की भावना से होती है। उसकी कीर्ति युगों तक गूँजती रहती है।

प्रश्न 3

कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?

हल

कवि ने दधीचि, कर्ण, रंतिदेव और उशीनर जैसे पौराणिक महान व्यक्तियों के उदाहरण देकर यह संदेश दिया है कि सच्ची मनुष्यता दूसरों के लिए अपना सर्वस्व त्यागने में है।
रंतिदेव ने भूख (क्षुधा) से व्याकुल होने पर भी अपने हाथ का थाल (भोजन) दे दिया।
दधीचि ऋषि ने देवताओं के कल्याण के लिए अपनी अस्थियाँ (हड्डियाँ) दान कर दीं, जिनसे इंद्र का वज्र बना।
उशीनर (गंधार देश के राजा) ने एक कबूतर की जान बचाने के लिए अपना स्वयं का मांस काटकर दे दिया।
कर्ण ने सहर्ष (खुशी से) अपना कवच और कुंडल (शरीर-चर्म) दान कर दिया।
इन उदाहरणों से कवि का संदेश है — 'अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?' अर्थात् यह शरीर नश्वर है; मनुष्य को अपने शरीर की रक्षा से अधिक दूसरों की भलाई के लिए जीना चाहिए।

उत्तर: कवि का संदेश है कि सच्चा मनुष्य वही है जो नश्वर शरीर के मोह से ऊपर उठकर दूसरों के लिए अपना सर्वस्व — यहाँ तक कि जीवन — भी त्यागने को तैयार हो, जैसा दधीचि, कर्ण, रंतिदेव आदि ने किया।

प्रश्न 4

कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

हल

कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व-रहित जीवन जीने का संदेश दिया है —
'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।'
कवि कहते हैं कि धन-संपत्ति (तुच्छ वित्त) से कभी अंधे (मदांध) मत बनो।
यह सोचकर गर्व मत करो कि तुम्हारा कोई संरक्षक (सनाथ) है — क्योंकि इस संसार में कोई अनाथ नहीं है; त्रिलोकनाथ (ईश्वर) सबके साथ हैं।
अतः धन और शक्ति का अहंकार छोड़कर विनम्रता से जीना चाहिए।

उत्तर: 'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में, / सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में' — इन पंक्तियों में कवि ने गर्व-रहित जीवन जीने का संदेश दिया है।

प्रश्न 5

'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

हल

कविता में कवि ने कहा है — 'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है।
इसका अर्थ है कि संसार के सभी मनुष्य आपस में भाई-बंधु हैं।
कवि का तर्क है — 'पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है' — अर्थात् एक ही परमपिता परमात्मा ने सभी को जन्म दिया है, इसलिए सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं।
बाहरी रूप से जाति, वर्ण, धर्म, देश के भेद दिखाई पड़ते हैं, किंतु वेद (शास्त्र) साक्षी हैं कि सभी मनुष्यों की आत्मा

एक है — 'अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।'

यह समझ आ जाने पर ही मनुष्य दूसरों के दुख को अपना दुख मानेगा और परोपकार करेगा।

कवि के अनुसार — 'अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे।'

उत्तर: 'मनुष्य मात्र बंधु है' का अर्थ है कि सभी मनुष्य एक ही परमपिता की संतान होने के कारण आपस में भाई-बंधु हैं; बाहरी भेद केवल कर्मफल से हैं, आत्मा की एकता शाश्वत है।

प्रश्न 6

कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

हल

कवि ने एकता की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि परस्पर सहयोग और एकता से ही जीवन की विपत्तियों का सामना किया जा सकता है।

कविता में कहा गया है — 'परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी' — अर्थात् एक-दूसरे का सहारा लेकर आगे बढ़ो।

'अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी' — मिलकर चलने से ही हम देवत्व की गोद (अमर्त्य-अंक) में निष्कलंक (अपंक) होकर उठ सकते हैं।

कवि यह भी कहते हैं — 'रहो न यों कि एक से न काम और का सरे' — अर्थात् ऐसे मत रहो कि एक व्यक्ति के होने से दूसरे का काम न बन सके।

एकता और सहयोग से ही समाज और देश का उत्थान होता है — 'तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे।'

उत्तर: कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि परस्परावलंब (एक-दूसरे का सहारा) से ही मनुष्य विपत्तियों से उबर सकता है और सच्ची मनुष्यता का मार्ग केवल मिलकर चलने से प्रशस्त होता है।

प्रश्न 7

व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

हल

इस कविता के आधार पर व्यक्ति को निम्नलिखित प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए —

1. परोपकारी जीवन — दूसरों के हित के लिए जीना और मरना सच्ची मनुष्यता है।
2. निर्भय जीवन — मृत्यु से न डरना; 'विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।'
3. उदार जीवन — दधीचि, कर्ण की तरह आवश्यकतानुसार अपना सर्वस्व दान देने की भावना रखना।
4. निरहंकार जीवन — धन और पद का गर्व न करना; 'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में।'
5. सहयोगी जीवन — सबके साथ मिलकर चलना, एक-दूसरे का सहारा बनना।
6. सहानुभूतिपूर्ण जीवन — दूसरों के दुख में सहानुभूति रखना; 'सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही।'
7. विपत्तियों में अविचल — 'चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए, / विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।'

उत्तर: व्यक्ति को परोपकारी, निर्भय, उदार, निरहंकार, सहयोगी और सहानुभूतिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए — ऐसा जीवन जो केवल अपने लिए नहीं बल्कि समस्त मानवता के हित के लिए जिया जाए।

प्रश्न 8

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

हल

'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त निम्नलिखित मुख्य संदेश देना चाहते हैं —

1. सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीए — 'वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।' यह पंक्ति कविता का मूल स्वर है।
2. स्वार्थपरता पशु-प्रवृत्ति है — केवल अपने लिए जीना पशु के समान है।
3. उदारता, परोपकार और त्याग ही मनुष्य को महान बनाते हैं।
4. सभी मनुष्य एक हैं — जाति, धर्म, वर्ण के भेद बाहरी हैं; भीतर से सब एक परमपिता की संतान हैं।
5. विपत्तियों में मिलकर चलने से ही मानव-समाज का उत्थान होता है।
6. अहंकार और धन का मद छोड़कर विनम्रता से जीना चाहिए।

संक्षेप में — कवि मनुष्य को स्वार्थ, अहंकार और संकीर्णता से ऊपर उठकर सर्वहित की भावना से जीने की प्रेरणा देता है।

उत्तर: कविता का मूल संदेश है — सच्चा मनुष्य वही है जो परोपकार, उदारता और त्याग के माध्यम से मानवता की सेवा करे; स्वार्थ पशु-प्रवृत्ति है और परार्थ ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्नावली 3.2 — प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए — सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही_ वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही। विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा, विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

हल

इन पंक्तियों में कवि ने सहानुभूति (दूसरों के दुख को महसूस करने की भावना) को सबसे बड़ी विभूति (संपत्ति/शक्ति) बताया है।

'सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही' — अर्थात् मनुष्य के पास सबसे बड़ा धन यह है कि वह दूसरों के दुख को अपना समझे।

'वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही' — जो व्यक्ति सहानुभूतिपूर्ण और उदार होता है, सारी पृथ्वी (मही) सदा उसके वश में रहती है।

'विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा' — महात्मा बुद्ध ने अपने समय की पारंपरिक मान्यताओं का विरोध किया था, किंतु उनकी करुणा और दया के प्रवाह ने सभी विरोधों को बहा दिया।

'विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?' — संसार के लोग उनके सामने विनम्रतापूर्वक झुकते रहे।

भाव यह है कि सहानुभूति और करुणा ही सच्ची शक्ति है; यह किसी भी विरोध को जीत लेती है।

उत्तर: सहानुभूति ही सबसे बड़ी विभूति (धन/शक्ति) है; इसी से पृथ्वी वश में होती है। बुद्ध के सभी विरोधों को उनकी करुणा ने बहा दिया और संसार उनके सामने झुका।

प्रश्न 2

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए — रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में, सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में। अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं, दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

हल

इन पंक्तियों में कवि अहंकार और धन के मद से दूर रहने की सीख देते हैं।

'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में' — कभी भी धन-संपत्ति (तुच्छ वित्त) के नशे में अंधे (मदांध) मत बनो।

'सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में' — यह सोचकर कि तुम्हारे पास संरक्षण और संपत्ति है, अपने मन में गर्व मत करो।

'अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं' — इस संसार में कोई भी अनाथ नहीं है क्योंकि तीनों लोकों के स्वामी (त्रिलोकनाथ) सबके साथ हैं।

'दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं' — दीनों के बंधु (ईश्वर) के हाथ बड़े और विशाल हैं, वह सबकी रक्षा करने में समर्थ हैं।

भाव यह है कि धन और शक्ति का अहंकार व्यर्थ है; ईश्वर सबके रक्षक हैं, इसलिए विनम्र रहो।

उत्तर: धन के मद में कभी अंधे मत बनो और न ही अपनी शक्ति का घमंड करो; इस संसार में कोई अनाथ नहीं — त्रिलोकनाथ (ईश्वर) सबके रक्षक हैं।

प्रश्न 3

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए — चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए, विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए। घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी, अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

हल

इन पंक्तियों में कवि एकता और सहयोग के साथ जीवन-मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं।

'चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए' — अपने इच्छित (अभीष्ट) लक्ष्य की ओर प्रसन्नतापूर्वक (सहर्ष) खेलते-खेलते चलते रहो।

'विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए' — रास्ते में जो भी विपत्तियाँ और बाधाएँ (विघ्न) आएँ, उन्हें हटाते हुए आगे बढ़ो; उनसे घबराओ नहीं।

'घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी' — आपसी मेल-मिलाप (हेलमेल) कभी कम न हो और भिन्नता (मतभेद/दूरी) कभी न बढ़े।

'अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी' — सभी लोग किसी एक मार्ग पर (तर्क-वितर्क से परे होकर) सावधान यात्री (सतर्क पंथ) बनें।

भाव यह है कि जीवन की राह पर प्रसन्नता और एकता से आगे बढ़ो, विपत्तियों से न घबराओ और आपसी भेद न बढ़ने दो।

उत्तर: जीवन-मार्ग पर प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ो, विपत्तियों को ढकेलते हुए चलो; आपसी मेलमिलाप बनाए रखो और भिन्नता से बचते हुए सब एक साथ सावधानी से आगे बढ़ो।